

बम्बे शहरे श्रमजीवीर उपयुक्त मूल्यमान

क्षितिमोहन मुकर्जी

ये कोन निर्धारित समयेर व्यवधाने साधारण मानुषेर आर्थिक अवस्था उन्नति ह्येछे कि ना ए विषये यथायथ भावे अनुसंधान करते हले दुइ धरणेर तथ्यानुसंधान करार दरकार ह्य. प्रथमत साधारण मानुषेर गडपडता आय बेडेछे कि कमेछे से कथा जाना दरकार. किन्तु तातेइ यथेष्ट हलो ना. साधारण व्यवहार्य जिनिषेर पण्यमूल्य कि भावे बेडेछे वा कमेछे से विषय खुटिये विचार करार दरकार ह्य, केन ना व्यवहार्य सम्पदेर परिमाणइ मानुषेर आर्थिक अवस्था परिमापक, टाकार अङ्क आपातभात्रा मात्र. समयेर परिवर्तने व्यवहारित मुद्रार ऋयशक्ति यदि कमे गिये थाके ताहले सेइ खण्डित ऋयशक्तिर पर्ययेइ से मुद्रार तुलना हते पारे, पूर्ववर्ति समयेर मुद्रार सडे. फले ये कोन स्थानकाले प्रचलित मुद्रार नाम एकइ थाकाय मानुषेर आटपौरे हिसाबे आन्ति घटते पारे, से मुद्रार नाम टाका, पाअण्ड वा डलार याइ होक ना केन. विभिन्न धरणेर लोकेर विभिन्न धरणेर जिनिषपत्र केनार प्रयोजन ह्य बले, कोन श्रेणीर मानुषेर प्रयोजने पण्यमूल्य निर्धारण करा ह्येछे से विषयओ सचेतन थाका प्रयोजन. मूल्यमान निर्धारणेर सङ्केतसंख्या निर्माण प्रसडे जटिल तत्त्वगत आलोचना करा बर्तमान क्षेत्रे सम्पूर्ण आबान्तर हलेओ मूल्यमान निर्धारण सम्पर्के कएकटि मूलगत तत्त्व सम्बन्धे अबहित थाका प्रयोजन.

बम्बे शहरस्थित कापडेर कले नियोजित साधारण श्रमिकेर बास्तब श्रममूल्येर ऐतिहासिक धारा निर्धारण प्रसडे एक विशेष मूल्यमान निर्धारक सङ्केतसंख्यार धारा लेखक कतुक बबहृत ह्येछे^१. ए प्रसडे लक्ष करा प्रयोजन ये यथायथ भावे तुलनीय श्रममूल्य निर्धारक कोन सङ्केतसंख्या भारतवर्षेर कोनो शहरेर जन्यइ पाओया याय ना. सुतरां ए विषये बैज्ञानिक आलोचना करते हले मूल्यमान निर्धारक सङ्केतसंख्या गडे नेओया भिन्न गत्यान्तर थाके ना. एइ गडे नेओयार काज सहज नय एवं यथेष्ट समय सापेक्षओ. किभावे एइ मूल्यमान निर्धारक सङ्केतसंख्या सम्बलित करा ह्येछे तार सम्पूर्ण व्याक्षा यथास्थाने करा ह्येछे. अपरोक्त सङ्केतसंख्या अनुयायी मूल्यमानेर तुलना यथायथ ह्येछे कि ना से विषय स्थिर सिद्धान्त हाओया एकान्त प्रयोजनीय. बम्बे शहरे श्रमजीवीर अपयुक्त मूल्यमान निर्धारक सङ्केतसंख्या व्यापक प्रयोजनीयता आछे, केन ना बम्बे शुधु कापडेर कलेर अन्यतम केन्द्र नय, भारतवर्षेर अन्यतम प्रधान यन्त्रशिल्प केन्द्र. सुतरां एइ सङ्केतसंख्यार व्यापक व्यवहार कल्पना करा दुरुह नय. नाना सूत्रे प्राप्तव्य नानाधरणेर तथ्यादिर कोठाय अपरोक्त सङ्केतसंख्या निर्धारित आनुपातिक मूल्यमान यथायथ मने करा येते पारे कि ना बर्तमान प्रबन्धे: प्रधानतः तारइ आलोचना करा ह्येछे. प्रसङ्कमे निर्देश करा येते पारे ये यदि एइ तुलनामूलक आलोचनाय पूर्वकथित सङ्केतसंख्यार कोन न्यूनता धरा पडे ताहले सेइ न्यूनतार परिमाण निर्देश कराओ अवश्य प्रयोजनीय. एक कथाय, बम्बे शहरेर साधारण श्रमजीवीर श्रममूल्य निर्धारक मूल्यमान प्रसडे एइ सङ्केतसंख्या यदि यथायथ ना ह्य ताहले सेइ मूल्यामान प्रसडे नतुन करे कएकटि सङ्केतसंख्यार धारा गठन कराओ दरकार. १९०० शाल